कथक नृत्य

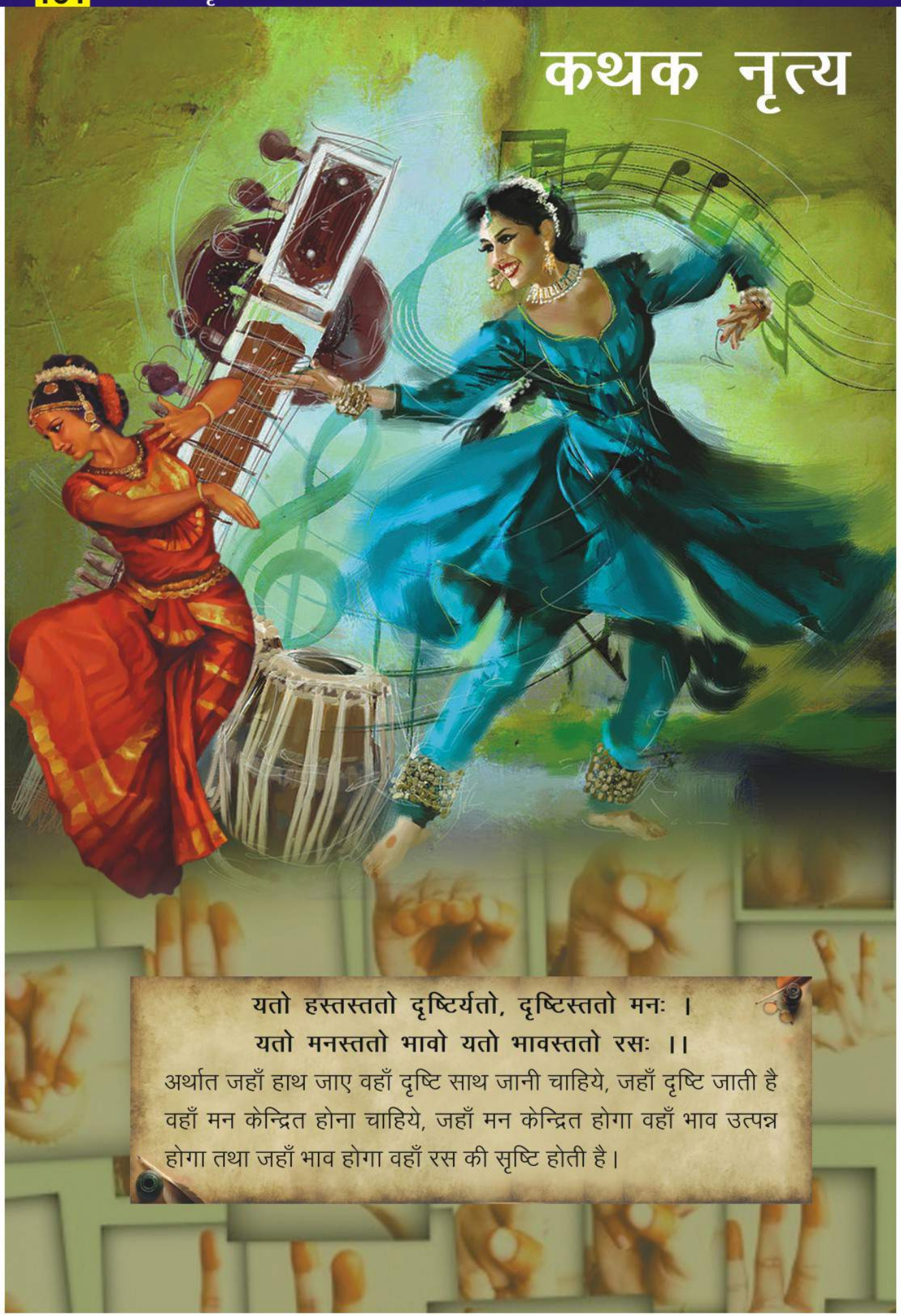

यतो हस्तस्ततो दृष्टिर्यतो, दृष्टिस्ततो मनः ।
यतो मनस्ततो भावो यतो भावस्ततो रसः ।।

अर्थात जहाँ हाथ जाए वहाँ दृष्टि साथ जानी चाहिये, जहाँ दृष्टि जाती है वहाँ मन केन्द्रित होना चाहिये, जहाँ मन केन्द्रित होगा वहाँ भाव उत्पन्न होगा तथा जहाँ भाव होगा वहाँ रस की सृष्टि होती है।

अध्याय 1

संगीत व नृत्य संबंधी पारिभाषिक शब्द

लय

ततः कला काल कृतो लय कृत्यभि संज्ञित : ।
त्रयो लायस्तु विज्ञेया द्रुत मध्य विलम्बिताः ।। – नाट्य शास्त्र

अर्थात काल में कलाओं के मध्य स्थित विश्रांति को लय की संज्ञा दी गई है जिसके द्रुत, मध्य व विलंबित तीन भेद हैं।

''क्रियानन्तर विश्रान्ति लयः'' – संगीत रत्नाकर

अर्थात क्रिया के मध्य विश्रांति को लय माना है। लय का संबंध गति से है। एक समान गति में कोई क्रिया लय युक्त या लयबद्ध होती है। इस क्रिया में समय की एक समान–चाल या अखंड गति, लय कहलाती है। संगीत के संदर्भ में– ताल में क्रिया का विस्तार या दो क्रियाओं के बीच की दूरी लय है।

उदाहरण 1. घड़ी

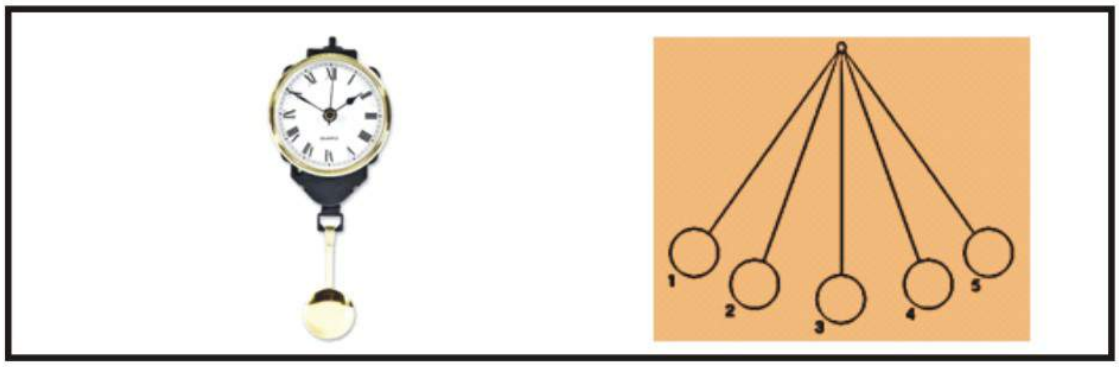

घड़ी में पेंडुलम (लोलक) अथवा सैकंड की सुई एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमती है। इस क्रिया में पहले व दूसरे स्थान के मध्य की समान दूरी लय है।

उदाहरण 2. अंक

- अंक के इस क्रम में 1 2 3 4 आदि अंक तो ताल कहलाएँगे ।
- अंकों का विस्तार अथवा 1 व 2 आदि संख्याओं के बीच की दूरी लय है।

सांगीतिक संदर्भ में यहाँ अंको के मध्य का क्षेत्र या एक से दूसरे अंक बोलने के दौरान की दूरी लय कहलाएगी। लय में क्रिया की गति एक समान कायम रहती है। प्रकृति के समस्त कार्य लयबद्ध है। ब्रह्मांड

में पृथ्वी व अन्य ग्रहों का घूमना, ऋतु चक्र, श्वसन क्रिया आदि समस्त कार्य संतुलन, निश्चित गति व लय से ही सम्पन्न हो सकते हैं। संगीत कला, लय व ताल के बिना निष्प्राण है। मुख्य रूप से लय तीन प्रकार की होती है। – विलंबित लय, मध्य लय, द्रुत लय ।

विलंबित लय

अर्थात विलंब से, देरी से। जिस क्रिया में गति/लय/चाल सामान्य से धीमी हो, उसे विलंबित लय कहते हैं। यह मध्य लय की आधी होती है।

मध्य लय

अर्थात सामान्य चाल में। विलंबित लय से तेज व द्रुत लय से धीमी क्रिया मध्य लय कहलाती है।**ज**

अर्थात तेजी से। मध्य लय से दुगुनी गति में की गई क्रिया द्रुत लय में होगी।

लय के तीनों प्रकारों को घड़ी में सैकंड की सुई से भी समझा जा सकता है –

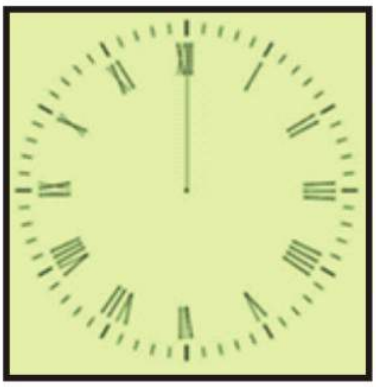

घड़ी की सुई का चलना	:	1	2	3	4	
दो सैकंड में 1 नंबर बोलना	:	1	–	2	–	विलंबित लय
सैकंड की सुई के साथ बोलना	:	1	2	3	4	मध्य लय
1 सैंकड में दो नंबर बोलना	:	1,2	1,2	1,2	1,2	द्रुत लय

ताल

''ताल काल क्रिया मानम्'' – नाट्यशास्त्र

अर्थात समय नापने का साधन ताल है।

तकारः शंकर प्रोक्तो लकारः पार्वती स्मृताः।
शिव शक्ति समायोगात् ताल इत्यभिधीयते।।

शास्त्रों में शिव व शक्ति का संयोग (तांडव व लास्य) ताल कहलाता है। संगीत को कालबद्ध प्रतिष्ठित करने के लिये ताल की ज़रूरत होती है। ताल को अनन्त असीम ''काल'' के द्वारा ही नापा जा सकता है। गायन, वादन, नृत्य आदि क्रियाओं को विशिष्ट बोल समूहों के माध्यम से समय में बांधना/स्थापित करना/प्रतिष्ठित करना ताल है। इसे नापने के लिये समय के अंग बनाने आवश्यक होते हैं।

समय का किसी नियमित गति से भ्रमण करना लय है। लय को समान खंडों में विभक्त करना मात्रा है तथा विभिन्न संख्या के मात्रा समूहों को विशिष्ट बोलों से युक्त करना ताल है। ताल की संरचना में मात्रा,विभाग,ताली,खाली,आदि तत्व दिखाई देते हैं। गहन अध्ययन हेतु विधार्थी इसी पुस्तक में अन्यत्र ताल के दस प्राण का अध्ययन अवश्य करें। विभिन्न मात्राओं के समूह को एक विशिष्ट ताल का नाम दिया जाता है। जैसे – 8 मात्रा का समूह कहरवा, 10 मात्रा का समूह झपताल, 12 मात्रा का समूह इकताल, 16 मात्रा का समूह त्रिताल आदि।

उदाहरण –झपताल (10 मात्रा, 4 भाग)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धीं	ना	धीं	धीं	ना	तीं	ना	धीं	धीं	ना
×		2			0		3		

यह 10 मात्रा के ताल चक्र का एक उदाहरण है।

आवर्तन

अर्थात आवृत्ति। ताल में पहली मात्रा (सम) से अंतिम मात्रा तक के पूरे एक भाग को गिनकर पुनः पहली मात्रा (सम) तक आने की प्रक्रिया को एक आवृत्ति, आवर्तन या चक्र नामों से जानते हैं। वस्तुतः गायन, वादन, नृत्य कलाओं में ताल के (समय बद्ध) चक्रों की आवृत्ति निरन्तर चलती रहती है। इसके सहारे ही संगीत की विभिन्न क्रियाएँ की जाती हैं।

ठेका

ताल वाद्यों पर बजाए जाने वाले बोलों की एक विशिष्ट रचना अथवा बोलों के समूह को उसके मूल स्वरूप में बजाना ठेका कहलाता है। जैसे – ताल कहरवा

1	2	3	4	5	6	7	8
धा	गे	न	ति	न	क	धी	न
X				0			

तत्कार

कथक नृत्य की प्रारंभिक शिक्षा में तत्कार का विशेष महत्त्व है। तत्कार अंग कथक की अपनी निजी विशेषता है। यह सिर्फ कथक नृत्य शैली में ही दृष्टव्य है। तत्कार में ताल के बोलों को पैर से निकालने का अभ्यास किया जाता है। जिस प्रकार तबला वादन में ताल के अंतर्गत कायदा व उसके पलटे सिखाये जाते हैं, ठीक उसी प्रकार कथक नृत्य में ताल के विभिन्न बोलों पर ततकार व उसके पलटों का अभ्यास होता है इससे तैयारी में उतरोत्तर निखार आता है। नृत्य के दौरान तत्कार से द्रुत लय में पदाघात व घुंघरू की ध्वनि से चमत्कार दिखाये जाते हैं।

उदाहरण–त्रिताल ठेका

X	2	0	3
धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
तत्कार के बोल			
ता थेई थेई तत्	आ थेई थेई तत्	ता थेई थेई तत्	आ थेई थेई तत्
पैर (दांया–बांया)			
दां बां दां बां	बां दां बां दां	दां बां दां बां	बां दां बां दां

इसमें लय के विविध भेदों से विचित्रता दिखाते हुए ''लय बांट'' तथा बोल में विभिन्न बदलाव दर्शाते हुए ''बोल बांट'' प्रदर्शित करते हैं

ठाठ

थाट, ठाठ, ठाट शब्द गायन, वादन व नृत्य में विभिन्न अर्थभेदों से प्रचलित हैं। कथक नृत्य के आरंभ में अथवा किसी भी तोडे आदि के बाद किसी आकर्षक भंगिमा में खड़े होने को ठाठ कहते हैं। लखनऊ घराने में ठाठ मुद्रा में बांये पैर पर खड़े होकर बांये हाथ को बांयी ओर फैलाते हैं। जयपुर घराने में इसके विपरीत दायें हाथ पैर का कार्य करते हुए कलाई व गर्दन का आकर्षक संचालन होता रहता है।

गायन, वादन शब्दावली में राग की उत्पत्ति का कारक ठाठ है। उत्तर भारतीय परंपरा में 10 थाट – बिलावल, कल्याण, खमाज, काफी, आसावरी, भैरवी, तोड़ी, भैरव, पूर्वी, मारवा मान्य हैं वहीं कर्नाटक संगीत में 72 मेल/थाट व्यवस्था है।

आमद

आमद का अर्थ होता है 'आगमन'या प्रवेश। आमद में नृत्य का आरंभ एक खास अंदाज में नृत्य के बोलों पर विलंबित लय में आगे व तिरछे बढ़ते हुए करते हैं, फिर दायें हाथ को सिर से स्पर्श करते हुए बांये हाथ को फैलाकर भावपूर्ण मुद्रा में खड़े होते हैं।

सलामी (नमस्कार)

नृत्य में जब किसी तोड़े के बाद नृत्यकार सभा को सलाम करता है, यह विशेष अंग सलामी कहलाता है। सलामी का प्रचार मुगल दरबारों से प्रचार में आया। धीरे–धीरे सलामी कथक की एक विशेष अदा व पहचान बन गई। वर्तमान में पुष्पांजलि व रंग प्रवेश पूजा भी समान रूप से प्रचलित है। लखनऊ घराने में सलामी तथा जयपुर घराने में प्रणाम/नमस्कार का चलन है।

भाग–ब

असंयुक्त हस्त मुद्रा अथवा विन्यास

नंदिकेश्वर के 'अभिनय दर्पण' के अुनसार नर्तक को गीत अवश्य गाना चाहिये। गीत के अर्थ को हाथों व अंगुलियों द्वारा व्यक्त करना चाहिए। गीत के अंतर्भाव को आँखों द्वारा व्यक्त करना चाहिये तथा गीत में निहित ताल को पाँवों द्वारा व्यक्त करना चाहिये। इस संदर्भ में अभिनय दर्पण का वक्तव्य –

यतो हस्तस्ततो दृष्टिर्यतो, दृष्टिस्ततो मनः ।
यतो मनस्ततो भावो यतो भावस्ततो रसः ।।

अर्थात जहाँ हाथ जाए वहाँ दृष्टि साथ जानी चाहिये, जहाँ दृष्टि जाती है वहाँ मन केन्द्रित होना चाहिये, जहाँ मन केन्द्रित होगा वहाँ भाव उत्पन्न होगा तथा जहाँ भाव होगा वहाँ रस की सृष्टि होती है।

इस प्रकार नृत्य के अन्तर्गत हस्तमुद्राओं की अपनी एक अलग भाषा है जिसके द्वारा नर्तक, नृत्य की गहराई को सुगमता से प्रस्तुत कर पाता है, जागरूक व रूचिवान श्रोता इस गहराई को ग्रहण कर आनंदित होता है।

व्यावहारिक जीवन में भी हम अपने विचारों व भावों की अभिव्यक्ति के लिये संकेतों का प्रयोग करते हैं। मूक–बधिर व्यक्ति तो संपूर्ण जीवन केवल संकेतों के माध्यम से ही व्यतीत कर पाते हैं। पशु–पक्षियों में भी संकेत के स्वरूप दिखाई देते हैं। हाथ, पाँव, आँख, गर्दन व मुख की विविध मुद्रा अथवा विन्यास, हम सभी दैनिक जीवन में प्रयुक्त करते हैं। इन्हीं विन्यास अथवा मुद्राओं का शास्त्रोक्त निर्धारित स्वरूप नृत्य में प्रयुक्त होता है, जिसके अधिकांश विन्यास प्रकृति से ही ग्रहण किए गये हैं।इसमें हाथों व ऊँगलियों की भिन्न–भिन्न विशेष स्थिति होती है, शास्त्रोक्त दो प्रकार की मुद्राएँ है – असंयुक्त तथा संयुक्त

(असंयुक्त हस्त मुद्रा)

(मुद्रा प्रयोग हेतु उंगलियों के नाम)

(संयुक्त हस्तमुद्रा)

एक हाथ द्वारा की जाने वाली मुद्रा असंयुक्त तथा दोनों हाथों की मुद्रा संयुक्त मुद्रा मानी जाती है।भरत के 'नाट्यशास्त्र', शारंगदेव कृत 'संगीत रत्नाकर' तथा नंदीकेश्वर कृत 'अभिनय दर्पण' आदि प्रामाणिक ग्रंथों में सभी अंगों से बत्तीस प्रकार के अंगहार, 108 करण तथा मंडलों का उल्लेख है जो नृत्य तथा अभिनय के गहन अध्ययन तथा उच्च कक्षाओं हेतु विषय वस्तु हैं।

असंयुक्त हस्तमुद्रा

(एक हाथ से किया जाने वाला विन्यास)

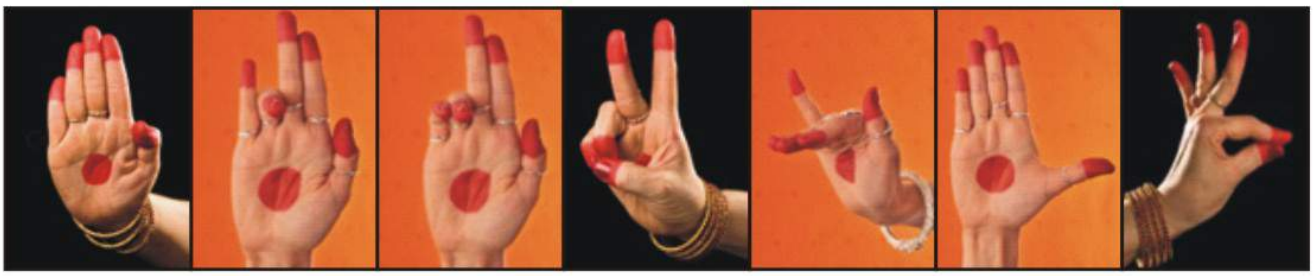

पताका त्रिपताका अर्ध पताका कर्तरीमुख मृगशीर्ष अर्द्धचन्द्र हंसस्य

शुकतुंड मुष्ठि सूची चन्द्रकला शिखर कपित्थ कटकामुख

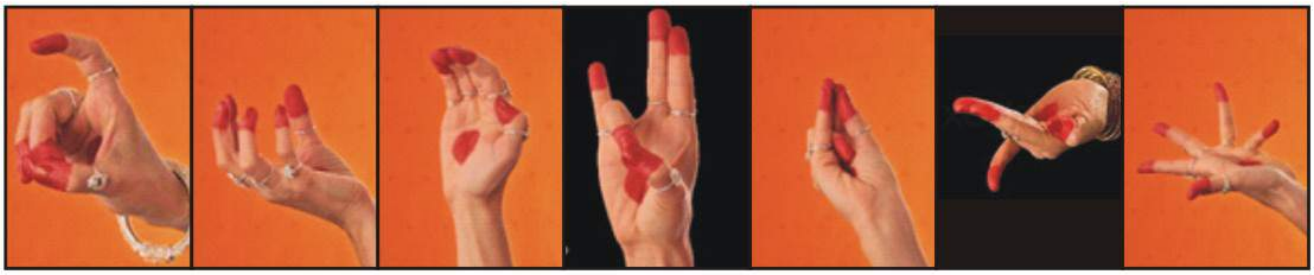

ताम्रचूड पद्मकोष सर्पशीर्ष मयूर कांगुल हंसपक्ष अलपद्म

चतुर भ्रमर अराल सिंहमुखा त्रिशूल मुकुल सन्दश

असंयुक्त हस्तमुद्रा तालिका (एक हाथ से किया जाने वाला विन्यास)

मुद्रा नाम	अर्थ	मुद्रा नाम	अर्थ	मुद्रा नाम	अर्थ
पताका	ध्वजा	त्रिपताका	ध्वज के तीन भाग	अर्ध पताका	अर्ध ध्वज
कर्तरीमुख	कैंची	मयूर	मोर	अर्द्ध चन्द्र	आधा चन्द्रमा
अराल	पर्वत का शिखर	शुकतुंड	तोते की चोंच	मुष्ठि	बंद हाथ, मुट्ठी
शिखर	श्रेष्ठ	कपित्थ	सौभाग्य लक्ष्मी	कटकामुख	कैंकड़ा
सूची	सुई	चन्द्रकला	चन्द्रमा की एक स्थिति	पद्मकोष	कमलदल
सर्पशीर्ष	सांप का फन	मृग शीर्ष	हिरण का सिर	सिंहमुखा	शेर का मुख
कांगुल	जलीय पुष्प	अलपद्म	खिलता हुआ कमल	चतुर	होशियार
भ्रमर	भंवरा	हंसस्य	हंस का सिर	हंसपक्ष	हंस के पंख
मुकुल	पुष्प कली	सन्दश	उठती आग, बलिदान	ताम्रचूड	मुर्गा
त्रिशूल	शिव प्रतीक				

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- समय का नियमित, समान या अखंड गति से भ्रमण करना लय है। ताल में दो क्रियाओं के बीच की विश्रान्ति लय कहलाती है।
- लय तीन प्रकार की है – विलंबित, मध्य व द्रुत
- गायन, वादन, नृत्य आदि क्रियाओं को समय के किसी चक्र में स्थापित करना ताल है। जैसे–कहरवा, दादरा।
- आवर्तन – आवृत्ति । गायन, वादन, नृत्य में ताल कीएक चक्रिक पूर्णता, आवृत्ति/आवर्तन कहलाता है।
- ताल वाद्यों की मूल रचना 'ठेका' है।
- तत्कार, कथक नृत्य का अंग है जिसमें धुंघरू व पदाघातों से तैयारी व प्रदर्शन किया जाता है।
- नृत्य के दौरान ताल के सम स्थान पर किसी प्रभावी शारीरिक मुद्रा की प्रस्तुति ठाठ है।
- गायन–वादन में स्वरों का ढांचा जो राग उत्पत्ति का कारक है, ठाठ कहलाता है।
- आमद – आगमन, एक खास अंदाज एवं भावपूर्ण मुद्रा में उपस्थित होना।
- किसी तोड़े के बाद सभा को सलाम करना 'सलामी' कहलाता है। जयपुर घराने में इस हेतु नमस्कार का चलन है।
- एक हाथ द्वारा की जाने वाली मुद्रा असंयुक्त तथा दोनों हाथों की मुद्रा संयुक्त मुद्रा मानी जाती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुवैकल्पिक प्रश्न

1. लय का संबंध किससे है ?
   (अ) स्वर (ब) गति (स) वेशभूषा (द) अलंकार
2. कहरवा ताल में कितनी मात्रा होती है ?
   (अ) सात (ब) आठ (स) दस (द) बारह
3. मुख्यतः लय कितने प्रकार की होती है ?
   (अ) दो (ब) तीन (स) चार (द) पाँच
4. कथक नृत्य में तत्कार का प्रदर्शन किया जाता है ?
   (अ) आँखों से (ब) वेशभूषा से (स) पाँवों से (द) वाद्य से
5. कथक नृत्य में 'ठाठ' का अर्थ है ?
   (अ) खड़े होने की विशेष मुद्रा (ब) राग का जनक (स) तोड़ा–टुकड़ा (द) तिहाई लगाना

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1. लय की परिभाषा देकर इसके प्रकार बताइये ?
2. ताल किसे कहते हैं ?
3. तत्कार का उदाहरण लिखिए ?
4. 'आमद' को परिभाषित कीजिए ?
5. गायन, वादन व नृत्य में ठाठ की भूमिका समझाइये ?

मुद्रा पहचानकर नाम लिखिए।

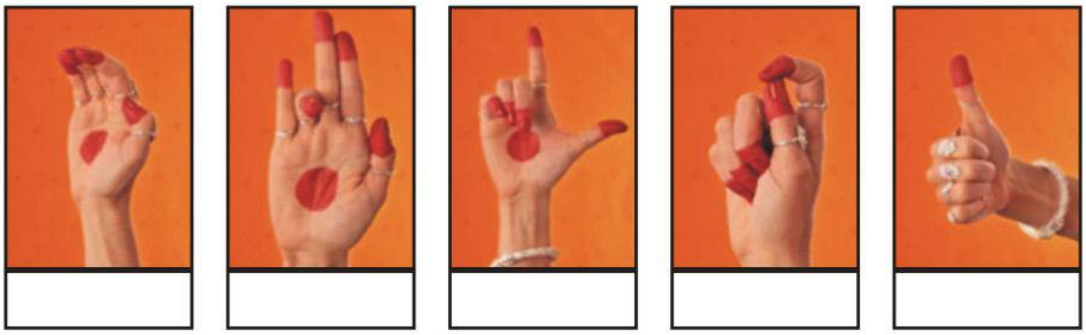

उत्तर–1–ब, 2–ब, 3–ब, 4–स, 5–अ

शिक्षकों हेतु अनुदेश :

- परिभाषाओं को प्रायोगिक तौर पर उदाहरण सहित समझाया जाए।
- मुद्राओं का प्रदर्शन, कम से कक्षा में तथा मंच पर करवावें तथा इनके व्यावहारिक प्रयोग को भी समझावें।